किशोरावस्था में नैतिक मूल्यों की कमीं

देवेन्द्र यादव

शोधछात्र (शिक्षाशास्त्र)
शिक्षक–शिक्षा विभाग
नेहरू ग्राम भारती (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी),
इलाहाबाद

समस्या का विवरणा :

किशोरवस्था में नैतिक मूल्यों की कमी' के प्रति लोगों की अभिवृत्ति जानने के लिये इस शोध परियोजना की रचना की गई। नैतिक मूल्य वह मूल्य है, जिनको व्यक्ति समाज में रहकर अर्जित करता है, जो सामाजिकमानक के अनुरूप होते हैं तथा इसके माध्यम से व्यक्ति को इस बात का ज्ञान होता है कि सांस्कृतिक समूह में क्या गलत और सही है। इसी के आधार पर व्यक्ति व्यवहार करता है। नैतिक मूल्य प्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति के व्यवहार व निर्णय की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। व्यक्ति उन मूल्यों को सीखने का प्रयास करता हैं, जो उसकी आवश्यकता एंव इच्छा को सन्तुष्टि प्रदान करती है तथा समूह द्वारा अनुमोदित होती है। व्यक्ति द्वारा अर्जित नैतिक मूल्य उसके व्यक्तित्व का प्रतिनिधत्व होते हैं एवं जीवन में मार्गदर्शन करते हैं। अतः नैतिक मूल्यों की कमी से तात्पर्य उपयुक्त मूल्यों का पर्याप्त रूप में ग्रहण न कर पाना है, जिससे व्यक्ति को जीवन में उचित मार्ग दर्शन नही प्राप्त हो पाता और वह पथ भ्रष्ट हो जाते हैं। किशोरावस्था वह अवस्था है जब स्वयं को अपनी क्षमता एवं गुणों को समझने की जरूरत हाती है। किशोरावस्था व्यक्ति के जीवन का वह मजत्पूर्ण समय है जब व्यक्ति विकास के सभी क्षेत्रों में उग्र परिवर्तन होता है। इस अवस्था में शारीरिक तथा मानसिक परिवर्तन इतनी तीव्र गति से आते हैं, कि किशोर स्वयं इन परिवर्तन को नहीं समझ पाते हैं। यह समय व्यक्ति में एक जबरजत परिर्वतन तथा उत्तेजना लाता है तथा वह यह समय जब व्यक्ति अपनी पहचान को विकसति करके स्वयं को पहचानता है। उसमें आत्म जागरूकता का विकास हो जाता है, अतः वह भवष्यि में क्या बनेगा, इसकी रूप–रेखा का निर्माण उसी समय होता है। इस समय जो परिवर्तन होता है, वह लडके–लड़कियों को परेशान कर देता है, उनकी सामाजिक भूमिका नये रूप में सामने आती है और वह विपरीत लिंग के प्रति नये आकर्षण का महसूस करते हैं। वह जो अस्पष्टता किशोरों में उत्पन्न होती है से एरिक्सन ने पहचान संक्रमण कहा। यह **संक्रमण** व्यक्तिगत जीवन में अथवा सम्पूर्ण किशोर वर्ग में हो सकती है। प्रायः इसको ''**तूफान एवं प्रतिबल**'' के रूप में तथा विभिन्न रूप में जैसे पीढ़ियों के बीच दूरी, व्यावसायिक एवं सामाजिक आत्मविस्मृति, अन्य संक्रमण, उभयवृत्तिता तथा पहचान संभ्रम के रूप में विचारा जाता है। पहचान संभ्रम को एरिक्सन ने इस प्रकार परिभाषिद किया, '' व्यक्ति समाज में अपने

भवष्यि की भूमिका के बारे में अनिश्चिता होता है तथा वातारवण से सहयोग ने मिलने पर अपनी भूमिका को पहचानने में कठिनाई का अनुभव करता है और वह सही ढंग से अपनी पहचान नहीं बना पाता। इस प्रकार को संभ्रस मनोसामारजिक विकार जैसे ,दुश्चिन्ता, निराशा, एकाकीपन, निराशावादी, प्रवृत्ति इत्यादि के रूप में दिखाई देती है, जो किशोरवर्ग की चारित्रिक विशेषताऐं हैं। मनोवैज्ञानिक **डी0एन0 सिंन्हा** के अनुसार यद्यपि सांस्कृतिक कारक निश्चित रूप से पहचान संभ्रम की तीव्रता पर प्रकाश डालते है, परन्तु तीव्र गति से आने वाले परिवर्तन भी इसके लिये महत्वपूर्ण हैं। परम्परागत मूल्यों का टूटना तथा सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक संरचना में संक्रमण आधुनिक समाज की एक मुख्य विशेषत है। संक्रमण उच्च दुश्चिन्ता से होने वाले पतन से प्राप्त होता है जिसको भारतीय विद्यार्थियों में देखा गया।

नैतिक मूल्य को प्रभावित करने वाले अनेक कारक है, जिसमें सामाजिक परिवर्तन एक मुख्य कारक है। सामाजिक परिवर्तन के अन्तर्गत पैतृक शैली एक मुख्य आयाम है। माता पिता अपने बच्चों को उचित निर्देशन तथा मार्गदर्शन कराते है, जिससे कि वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। परन्तु वर्तमान समय में सम्प्रेषण की कमी के कारण माता–पिता अपने बच्चों को प्रर्याप्त समय नहीं दे पाते है और न ही उनकी समस्याओं को समझ पाते हैं। उचित प्रकार से बातचीत न करने के कारण बच्चों में अविशवास, घुटन एवं अलगाव आदि पनपनें लगता है।

यद्यपित इस समय युवाओं में आत्म–जागरूकता का विकास हो जाता है, वह स्वयं को तथा वातावरण को समझाने का प्रयास करते हैं, जिसके लिये मार्गदर्शन की भी आवश्यकता होती है परन्तु अनुभव एवं नैतिकता की कमी सूझबूझ एवं उचित मार्गदर्शन के अभाव में किशोर उचित निर्णय लेने में असफल होते हैं। **वाल्टर एवं इरॉन** (1973) में अपने मध्ययन में पाया क माता–पिता का सहयोग न मिलने के कारण किशोर अपने इच्छित लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल होते हैं। फलस्वरूप उनपमें आक्रमक व्यवहार करने की प्रवृत्ति विकसित हो जाती है और नैतिक मूल्यों का पतन होता है।

छेव एवं अग्रवाल ने अपने अध्ययन में पाया कि किशोर में स्वयं के बारे मं संभ्रम होती है, वह यह समझ नही पाते कि क्या नैतिक है क्या अनैतिक वह केवल अधिक से अधिक आवश्यकता की पूर्ति करना चाहता है।

एरिक्सन के अनुसार किशोर पहचान संभ्राति से बचने के लिये अभिनेता/अभिनेत्री की पहचान को अपना लेते हैं और वास्तविक रूप से अपनी अस्मिता खो देते हैं। **बाण्डुरा** के सामाजिक सिद्धान्त के अनुसार किशोर दूसरों को माडल के रूप में देखते हैं ऐसी स्थिति में वह समाज द्वारा बहिष्कृत कार्यों जैसे अपराध, यौन क्रियाओं में लिप्त होना, हिंसात्मक कार्य आदि करते हैं। स्वभाव में भावुकता के कारण युवापीढ़ी शारीरिक एंव मानसिक समायोजन ठीक से स्थापित नही कर पाती है। **मुजतबा एवं माथुर** (1992) ने नशीले पदार्थों पर अध्ययन किया तथा पाया कि जब व्यक्ति स्वयं को परिस्थिति के साथ समायोजित नहीं कर पाता है तो उसमें तनाव एवं हीनता की भावना उत्पन्न हो जाती है। परिणामस्वरूप वह नशीले पदार्थों का सेवन करने लगता है।

कोलमैन (1976) के अनुसार युवावर्ग परिस्थिति के साथ संघर्ष न करके उससे पलायन कर जाते हैं। इसके द्वारा वह भय उत्पन्न करने वाली तथा आघात पूर्ण स्थिति को टाल देते हैं, जिसके कारण उन्हें एक निश्चित दिशा नहीं प्रापत हो पाती है।

सामाचार–पत्र तथा पत्रिका को देखने पर ज्ञात होता है कि आज का किशोर वर्ग अपना अधिकांश्ज्ञ समय इंटरनेट एवं मनोरंजन सम्बन्धी कार्यों में व्यतीत करता है या उन कार्यों को करता है, जिसके बारें में उसे स्वयं ज्ञान नहीं होता है कि व क्या कर रहा है। वह शिक्षा से हटकर अपना अमूल्य समय एवं शक्ति अनैतिक कार्यों में व्यय करता है।

नैतिक मूल्य को प्रभावित करने वाले अनेक कारक है, जिसमें सामाजिक परिवर्तन एक मुख्य कारक है। सामाजिक परिवर्तन के अन्तर्गत पैतृक शैली एक मुख्य आयाम है। माता पिता अपने बच्चों को उचित निर्देशन तथा मार्गदर्शन कराते है, जिससे कि वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। परन्तु वर्तमान समय में सम्प्रेषण की कमी के कारण माता–पिता अपने बच्चों को प्रर्याप्त समय नहीं दे पाते है और न ही उनकी समस्याओं को समझ पाते हैं। उचित प्रकार से बातचीत न करने के कारण बच्चों में अविशवास, घुटन एवं अलगाव आदि पनपनें लगता है। **अलेक्जेन्डर** (1973) ने अपने अध्ययन द्वारा स्पष्ट किया है कि जिन किशोरों में माता–पिता के बीच सम्प्रेक्षण दूरी होती है वह अपनी समस्याओं को माता–पिता के सामने नहीं रख पाते हैं जिससे उन्हें उचित मार्ग दर्शन नहीं प्राप्त हो पाता है। किशोर एवं युवाओं को परिवारिक स्नेह एवं माता–पिता के सामने नहीं रख पाते हैं। जिससे उन्हें उचित मार्गदर्शन नहीं प्राप्त हो पाता है। किशोर एवं युवाओं को पारिवारिक स्नेह एवं माता–पिता द्वारा पूर्ण सहयोग न मिलने के कारण ईर्ष्या, असन्तोष, विद्रोह आदि भावनाएं उत्पन्न हो जाती है। **वाल्डर एवं इरान** (1973) ने अपने अध्ययन में पाया कि जब माता–पिता का बच्चों के प्रति तिरस्कृत व्यहार होता है और उनको सुविधाओं से वंचित रखा जाता है तो उनमें किशोरावस्था में झूठ बोलने, चोरी करने, घर से भागने और आक्रमक व्यवहार करने की प्रवृत्ति विकसित हो जाती है। **मुरदी** (1979) ने माता–पिता द्वारा बच्चों के विषय चयन पर अध्ययन किया और पाया कि उच्च शिक्षा प्राप्त अथवा उच्च आर्थिक स्तर के अभिभावक अपने बच्चों से उच्च प्रत्याशा करते हैं, जिसके कारण वह उन्हें उच्च शिक्षा देना चाहते हैं तथा असफल हो जाने पर तिरस्कार पूर्ण व्यवहार करते है। फलस्वरूप उनमें स्वयं के बारे में भी पूर्ण जानकारी नहीं होती है। उनके सामने एक अस्पष्ट स्थिति होती है, वह यह नहीं समझ पाते हैं कि वह कौन है, उनकी योग्यता क्या है, यही से अस्मिता एवं स्वयं का आयाम निकालकर आता है, जिसको **एक्सिन** ने ''आस्मिता संकट'' कहा। **एरिक्सन** (1950) का मानना है कि पहचान संभ्राति से बचने के लिए किशोर हीरो अथवा साथियों की अस्मिता को अपना लेते हैं, जिसका मुख्य कारण मीडिया है।

डी0एन0 सिन्हा के अनुसार युवाओं में अनैतिकता का कारण मीडिया है, जिससे उन्हें विभिन्न प्रकार के माडल प्राप्त होते हैं और व अपनी पहचान खोकर उनका अुनकरण करते हैं। उनका आकांक्षा स्तर उच्च होता है परन्तु वह उनको प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम नहीं करते हैं और अनुचित साधानों द्वारा उसे प्राप्त करने की कोशिश कराते हैं।

बी0एस0 अग्रवाल (1974) ने शैक्षिक बेरोजगार पर अध्ययन किया तथा स्पष्ट किया कि किशोरों को व्यवसाय न प्राप्त होने पर उनमें विद्रोह उत्पन्न हो जाता है तथा नैतिक मूल्यों का

पतन होने लगता है। वाई0 सिंह (1971) ने बदलते हुए शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों की समस्या पर अध्ययन कियाक। यद्यपि शिक्ष, शिक्षण विधि एवं प्रशासक में परिवर्तन हो रहे है, परन्तु विद्यार्थी स्वयं को इस परिस्थति में समायोजित नहीं कर पाते हैं। जिसके कारण उनके सामने अनेक समस्याऐं उत्पन्न हो जाती हैं शिक्षक तथा विद्यार्थी के बीच सम्बन्ध अच्छा न होने के कारण भी युवाओं को उचित शिक्षा नहीं प्राप्त हो पाती है।

मोहन्टी एवं पानी (1979) ने विद्यार्थियों अध्यापकों के बीच होने वाली अर्न्तक्रिया का प्रभाव शैक्षिक निष्पादन पर देखा जिसमें उन्होंने पाया कि विद्यार्थी अध्यापक के बीच का सम्बन्ध कार्य निष्पत्ति पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है, इनके बीच अच्छा सम्बन्ध न होने पर युवावर्ग लक्ष्य के विमुख होकर शिक्षा के नाम पर केवल गुण्डागर्दी एवं तोड़फोड करते हैं।

किशोरावस्था में नैतिक मूल्यों के ह्रास होने के कारण किशोर उचित–अनुचित कार्यो में भेद नहीं कर पाते हैं। **सिन्हा एवं कृष्णा** (1982) ने नकल व्यवहार पर अध्ययन किया, जिसमें उन्होंने पाया कि किशोर शिक्षा प्राप्त करने हेतु कठिन परिश्रम न करके नकल द्वारा उच्च अंक प्राप्त करते हैं। यद्यपि वह परीक्षा में सफल हो जाते हैं परन्तु उनको ज्ञान नहीं होता है, जिससे वह उचित निर्णय लेने में भी असफल होते है। मैकेन्डेल (1955) ने किशोर अपराध पर अध्ययन किया। जिसमें उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि किशोरवर्ग को अपने वातावरण से पूर्ण सहयोग एवं स्नेह न मिलने के कारण अपराध प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाता है। **मुजतबा एवं माथुर** (1992) ने नशाखोरी एवं कुसमायोजन पर अध्ययन किया। जब व्यक्ति को स्वयं को परिस्थिति में समायोजित नहीं कर पाता तो वह तनाव से मुक्त होने के लिये नशीले पदार्थ का सेवन करने लगता है। स्वभाव में भावुकता के कारण किशोरवर्ग अत्यधिक उत्तेजित एवं कुण्ठित हो जाते हैं, जिससे वह अपना शारीतिक एवं मानसिक सन्तुलन खो बैठते हैं।

आर्थिक वंचन भी एक मुख्य कारक है, जिसके कारण किशोरावस्था में नैतिक मूल्य में कर्मी आती है। आर्थिक वंचन के कारण युवाओं को आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती है और वह अपराध अथवा भ्रष्टाचार द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

अतः अध्ययन से स्पष्ट होता है कि किशोरावस्था में अत्यधिक उत्तेजना होती है तथा स्वभाव से भावुक होने के कारण वह उसको नियन्त्रित नहीं कर पाते है, जिससे वह अनुचित साधनों का प्रयोग करते हैं, व्यक्तिगत तथा सामाजिक कर्तव्यों एवं मूल्यों की उपेक्षा करते हैं, जिससे नैतिक मूल्यों में कमी आती है।

अतः किशोरावस्था में नैतिक मूल्यों की कमी के प्रति लोगों की अभिवृत्ति जानने के लिये इस शोध परियोजना की रचना की गई।

परिकल्पनाः

1. किशोर वर्ग द्वारा की गई रेटिंग प्रौढ़ों की अपेक्षा अधिक नकारात्मक होगी।
2. पुरूषो की अपेक्षा स्त्रियों द्वारा की गई रेटिंग अधिक सकारात्मक होगी।

प्रविधि :

इसमें जीव संख्या की कुछ खास विशेषता या स्तर का पता लगाकर प्रतिदर्श में व्यक्तियों का चयन भी उसी विशेषता या स्तर के अनुरूप किया गया।

नमूना (मानदण्ड)

इस परियोजना के उद्देष्य पूर्ति हेतु स्तरीकरण तकनीक का प्रयोग किया जाता है क्योंकि यह तकनीक जनसंख्या का अधिक मात्रा में प्रतिनिधित्व करती है। इसमें सभी गुण एवं धर्म की समानता के आधार पर समष्टि के छोटे–छोटे समूह में बांटकर चयन करते हैं, जिससे समय एवं धन की बचत होती है।

युवाओं में नैतिक मूल्यों की कमी के प्रति लोगों को अभिवृत्ति का अध्ययन करने के लिए समष्टि से ऐसे प्रतिदर्श का चयन किया, जोकि युवावर्ग से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित है। इस प्रकार के प्रतिदर्श चयन में युवावर्ग शिक्षक तथा अभिभावक हैं।

प्रतिदर्श –

	किशोर	**अभिभावक**	**शिक्षक**
	16–20	35–50	35–50
पुरूष	13	6	6
महिला	13	6	6

इस परियोजना के उद्देष्य पूर्ति हेतु इसको 50 व्यक्तियों पर प्रशासित किया, जिसमें 26 किशोर 12 माता–पिता तथा 12 शिक्षक को लिया गया इस प्रतिदर्श को आयु समूह तथा यौन के आधार पर बॉटा। युवा को 16–20 आयु समूह में, जिसमे 13 पुरूष तथा 13 स्त्रियों को लिया। इसी प्रकार अभिभावक तथा शिक्षक को भी 35–50 आयु समूह के जिसमें 16–16 पुरूष तथा 16–16 स्त्रियों को लिया।

जनसांख्यिकी चर जैसे आयु, लिंग, शिक्षा, व्यवसाय संयुक्त/एकांकी परिवार, विवाहित/अविवाहित, निवास स्थान, मासिक आय के आधार पर लोों को छांट लिया, क्योंकि इन चारों का प्रभाव व्यक्ति की अभिवृत्ति पर पड़ता है।

किशोरावस्था में नैतिक मूल्यों की कमी के प्रति अभिवृत्ति जानने के लिए लिंग के आधार पर प्रतिदर्श चयन किया क्योंकि यौन का प्रभाव नैतिक मूल्य पर पड़ता है क्योंकि व्यक्ति सामाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा विभिन्न प्रकार के विचार, मूल्य, नियम आदि सीखता है। क्योंकि समाज में स्त्रियों की अपेक्षा पुरूषों को अधिक स्वतन्त्रता प्राप्त होती है, इसलिये वह प्रत्येक कार्य को स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी इच्छानुसार करना चाहते हैं, अपने स्वार्थ के लिये वह अनैतिक कार्यो को करते हैं जबकि लड़कों की अपेक्षा लड़कियों काअपनी भावना, संवेग एवं इच्छा पर नियन्त्रण होता है। अतः इसलिये प्रतिदर्श–यन में स्त्री–पुरूष को लिया। **तिवारी** (1980) ने लड़के–लड़कियों में दुश्चिन्ता का अध्ययन किया। जिसमें उन्होंने पाया कि उच्च आकांक्षा स्तर होने पर लड़कों में लड़कियों की तुलना में अधिक दुश्चिन्ता होती है।

परिवार की संरचना का भी अभिवृत्ति पर प्रभाव पड़ता है क्योंकि एकांकी परिवार में माता–पिता बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते हैं, जिसमें उनमें सम्प्रेक्षण दूरी अधिक होती है। वह बच्चों को उचित निर्देशन द्वारा मार्गदर्शन नहीं कर पाते हैं, जबकि संयुक्त परिवार में बच्चों को उचित निर्देशन, मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त होता है, जिससे वह अपनी समस्याओं का समाधान तुरन्त कर लेते हैं। गोरे (1978) परिवार प्रणाली में रहने वाले बच्चे स्वयं को अपने से

बड़ों के अनुरूप बनानने का प्रयत्न करते हैं तथा उनमें कर्तव्यनिष्ठा, आज्ञापालन, सम्मान, एवं सहयोग की भवना उत्पन्न होती है।

डिजाईन :

इसमें सर्वेक्षण डिजाइन का प्रयाग किया।

मापनी :

नैतिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का मापन करने हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। पदों को प्रश्नों के रूप में लिखकर लिर्कट की पांच बिन्दु मापनी के साथ प्रस्तुत किया गया।

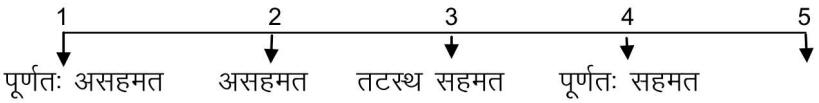

पद निर्माण :

नैतिक मूल्य की कमी को परिभाषित करने के बाद उसके विभिन्न कारक एवं आयाम के आधार पद का निर्माण किया। पदों का निर्माण करते समय उसकी विशेषताओं को ध्यान में रखा जैसे, पद विभेदात्मक हों, उनमें तीव्रता हो, द्विअर्थ, अस्पष्ट, लम्बे एवं संवेगात्मक न हों। प्रयोज्य रिस्पोन्स सेट न बनें इसलिए सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के पद बनायें जाते हैं, परन्तु "परन्तु किशोरावस्था में नैतिक मूल्यों की कमी" स्वयं में एक नाकारात्मक हैं, इसलिए यहां पर केवल नकारात्मक पदों का ही निर्माण किया। पदों का वाह् वैधता देखने के लिए इन पद को जजों को दिया, यह जज अपने क्षेत्र में प्रशिक्षित थे।

1-Psychology Teacher 2-Project Director
3-Account Offier 4-Education Teacher
5-Research Associate.

उन जजों को itmes form देने पर उनसे कहा कि आपको यह बताना है कि पद नैतिक मूल्यों की कमी से सम्बन्धित है या नहीं तथा पद स्पष्ट है या नहीं तथा आप पद अथवा शीर्षक के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत कर सकते हैं। जजों द्वारा की गई आलोचना के आधार पर पदों में पुनः संषोधन करने पर कुल 33 पद प्राप्त हुए। सभी जजों के बीच सहसम्बन्ध निकला।

तालिका :1

	1	2	3	4	5
1	—	.25	.09	.14	.19
2	.25	—	.52	.78	.74
3	.09	.52	—	.24	.50
4	.14	.78	.24	—	.49

5	.19	.74	.50	.49	—

उपर्युक्त तालिका 5 जजों के बीच सहसम्बन्ध को प्रदर्षित करती है, इनका आपस में कोई सम्बन्ध नही है। इस प्रकार बिम टंसपकपजल ज्ञात किया।

पद–विष्लेषण : सर्वप्रथम प्रत्येक पद के प्राप्तांक को जोड़कर कुल प्राप्तांक ज्ञात किया। कुल प्राप्तांक के आधार Q. 1, Q.3 तथा mdn निकाला। Q.1 & Q.3 के आधार पर निम्न एवं उच्च समूह छांटा तथा उनके बीच mdn, S.D. 't' निकाला। क्योंकि यदि समूह में सार्थक अन्तर हैं तो प्रत्येक पद में भी सार्थक अन्तर आना चाहिए। निकालने के पष्चात प्रत्येक प्रतिदर्ष का कुल प्राप्तांक के साथ प्रत्येक पद का सम्बन्ध ज्ञात करने के लिए ष्तष निकाला। यह जानने के लिए कि प्रयोज्य में तमेचवदेम ेमज तो नहीं बना, इसलिए प्रत्येक पजउमे को ेामूद में निकाली।

पद चयन : प्रत्येक पदों 't' एवं 'r' के आधार पर पद का चयन किया। जिन पदों का 't' तथा 'r' दोनों सार्थक था उनका चयन किया।

स्कोरिंगः इस शोध परियोजना में प्रयोज्य ने प्रत्येक पद पर मापनी के जिस अंक पर निशान लगाया था, उन सभी अंक को जोड़कर कुल प्राप्तांक निकाला, कुल प्राप्तांक के आधार पर Q.1, Q.2, Q.3, 't', 'r', Skewness में ज्ञात किया।

परिणाम :

तालिका 3, प्रत्येक चर के कुल प्राप्तांक तथा मध्यमान को प्रदर्षित करती है।

चर	प्राप्तांक	मध्यमान
किशोर	3545	136.4
अभिभावक	1727	143.9
शिक्षक	1646	137.2
लिंग		
पुरूष	3423	136.9
महिला	3552	142.1

विवेचनाः

प्रस्तुत परियोजना का उद्देष्य किशोरावस्था में नैतिक मूल्यों की कमी के प्रति लोगों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना। जिसमें मुख्य परिकल्पना किशोरवर्ग द्वारा की गई रेटिंग प्रोढ़ों की अपेक्षा नकारात्मक होगी। इस परियोजना से प्राप्त परिणाम इस परिकल्पना की पुष्टि करते हैं।

तालिका–1: जजों के बीच सहसम्बन्ध को प्रदर्षित करती है। पद की वाह् वैधता देखने के लिए कि पद नैतिक मूल्यों की कमी से सम्बन्धित है या नहीं, स्पष्ट है अथवा नहीं, पदों से बनी प्रश्नावली जज को दिया उनके द्वारा प्रत्येक पद पर मापनी के जिस पिन्टू पर निशान

लगाया गया था, उन सभी बिन्दु को जोड़कर कुल प्राप्तांक तथा मध्यमान के आधार पर 'r' निकाला, जोकि तालिका '1' द्वारा स्पष्ट होताा है। तालिका के द्वारा स्पष्ट होता है कि इन सभी 05 जजों का एक दूसरे के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है क्योंकि कण्गण 3 पर 0.05 पर तथा 0.01 पर जो Valu में दी गई है जबकि जजों के बीच निकालने गए सभी 'r' इस Value से कम हैं। अतः स्पष्ट होता है कि इनका आपस में कोई सम्बन्ध नहीं है।

तालिका–2: प्रत्येक चर के मध्यमान को प्रदर्षित करती है।

किषोरावस्था में नैतिक मूल्यों की कमी के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन के लिए मुख्य परिकल्पना यह की गई कि किषोरवर्ग द्वारा की गई रेटिंग प्रोढ़ों की अपेक्षा नकारात्मक होगी। तालिका द्वारा ज्ञात होता है किइस परिकल्पना की पुष्टि हुई। व्यवसाय का प्रभाव व्यक्ति की अभिवृत्ति पर पड़ता है क्योंकि शिक्षक जो कि विद्यार्थी के बारे में अधिक जानकारी रखते हैं। आये दिन कालेज तथा विश्वविद्यालय में हो रहे दंगे, अराजकता आदि द्वारा शिक्षक को विद्यार्थियों को वर्तमान स्थिति का पूर्ण ज्ञात होता है। इसलिए उनके द्वारा की गई रेटिंग अधिक सकारात्मक थी, जबकि अभिभावक ने अपने बच्चों की स्थिति को देखते हुए रेटिंग को इसलिए उनके द्वारा की गई रेटिंग षिक्षक की तुलना में नकारात्मक थी।

तालिका–2 द्वारा स्पष्ट होता है कि पुरूषों का मध्यमान स्त्रियों की अपेक्षा कम है, क्योंकि पुरूषों को स्त्रियों की अपेक्षा अधिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है इसलिए वह प्रत्येक कार्य को स्वतन्त्रता पूर्वक अपनी इच्छानुसार करना चाहते हैं, जिसके कारण वह अपने स्वार्थ हेतु अनुचित कार्यों को करने लगते हैं, जबकि लड़कियों को अधिक स्वतन्त्रता न मिले के कारण वह अपनी इच्छानुसार कार्य नही कर पाती हैं। तिवारी (1980) ने लड़के–लड़कियों में दुष्चिन्ता का अध्ययन किया जिसमें, उन्होंने पाया कि उच्च आकांक्षा स्तर होने पर लड़कों में लड़कियों की तुलना में अधिक उत्तेजना होती है तथा भावुक स्वभाव होने के कारण वह उन पर नियन्त्रण नहीं रख पाते हैं तथा अनुचित कार्य करने लगते हैं। इस प्रकार यह **परिकल्पना पुरूष की अपेक्षा स्त्रियों द्वारा की गई रेटिंग सकारात्मक होगी, की पुष्टि होती है।**

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1– अनन्था कृष्णन पी0 (1986) यूथ एण्ड आइडेन्टिटी क्राईसेस, जनरल ऑफ दॅ इण्डियन अकेडमी ऑफ अपलाइड साइकोलोजी vol-12ए No-1 पृष्ट0 सं0 28 से 32

2– कानेकर, एस0 एण्ड कोलसोवाला, एम0वी0 (1981) फ्रैक्टर एफेक्टिंग रिस्पांसबिलिटी ऐट्रिटसेल्यूटेड टू0 ए रेप विक्टिम जनरल ऑफ सोषन साइकॉलाजी, (vol 20;2) पृ0 सं0 285–7286

3– कौसल, एम0 आर0 (1970) हाउ पेरेन्ट्स बिइड इन्डिसिपिलिन एमंग स्टूडेन्ट इण्डियन जनरल ऑफ साईकोलोजी, vol-49ए छव.5 पृ0 सं0 7–11

4– कक्कड़ सुधीर (1982) आइडेन्टिटी एण्ड, एडल्टहुड पृ0सं0–51–84

5– गैरेसन काली सी (1986) साइकोजॉजी आफ एडोल्सेन्स, पाचवा संस्करण प्रेन्टिस हॉल नई दिल्ली। पृ0सं0 105

6– गोरवेन एम0 (1977) सेल्फ इमेज एण्ड सोषल चेंज स्टर्लिंग पब्लिशर्स पृ0सं0 168

7– डेब, बी.सी. एण्ड अग्रवाल बी0के0 (1974) आक्यूपेशनल ऐस्पाइरेशन एण्ड सोश्योकल्चर,
8– तिवारी जे0 (1980) लेविल आफ आइसपाइरेशन ऐज फन्कषन ऑफ एंग्जाइटी, इण्डियन सॉइक्लाजी रिविऊ, Vol. No. 4 पृ0सं0 46–50
9– नजम, एन एण्ड काउसर, एस (1992) ए कम्प्रेटिस स्टडी ऑफ पाकिस्तानी फैमिलीज लिविंग इन ज्वाइंट परसेस न्यू क्लियर फैमिली सिस्टम जनरल ऑफ द इण्डियन एकेडेमी ऑफ अपलाईड साईकोलोजी, Vol.18ए No-12 पृ0 सं0 612–66
10– पन्नुदरी, आर एण्ड जेयेकर, जे0 (1980) सोसाईड इन मद्रास, इण्डियन जनरल ऑफ साइकेरेटरी, Vol- 22 No-2 पृ0सं0 203–205
11– भूषण (1993) ए स्टडी आफ पैटर्न आफ फैमिली कम्प्यूनिकेशन पैरेन्ट्स एण्ड देयर एडालसेन्स चिल्ड्रेन, जनरल आफ परसानिलिटी एण्ड चिल्ड्रेन क्लिीनिकल
12– माथुर ए0 एण्ड मुजतबा, बी0 (1992) ड्रग एडिक्षन एण्ड मैलाएडजस्टमेन्ट, जनरल ऑफ दि इण्डियन एकेडमी ऑफ अपलाइड साइकोलाजी, Vol-7. No-10 पृ0 सं0 179–190
13– ष्षानमुधम टी0ई0 (1979) परसानालिटी फैक्टर्स अण्डरलाइन ड्रग ऐब्यूज एमंग कालेज स्टूडेन्ट, साईकॉलाजिकल स्टडीज, Vol.21ए No-1 पृ0सं0 24–34
14– सिन्हा एल0एन0के0 एण्ड कृष्ण, के0पी0 (1982) एम परसनाल्टी करेक्ट ऑफ चिरिंग बिहेवियर, किमनाल्जी, Vol-10. No-1 पृ0सं0 30–32
15– सिंह, ए0 के0, (2000) आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान मोती लाल बनारसी दास, नई दिल्ली 110028